कक्षा - 12
विषय - हिंदी

Sunil
Date 09/05/20

भरत-राम का प्रेम (तुलसीदास)

सारांश → प्रस्तुत चौपाई और दोहों को रामचरित मानस के अयोध्या कांड से लिया गया है। इसमे राम वन गमन के बाद भरत की मनोदशा का वर्णन किया गया है। भरत भावुक हृदय से बताते हैं कि राम का उनके प्रति प्रेमभाव है। वे बचपन से ही भरत को खेल में सहयोग देते रहते थे, और उनका मन कभी नहीं तोडते थे, वे कहते हैं कि इस प्रेमभाव को विधाता सहन नहीं कर सका और माता के रूप में उसने व्यवधान उत्पन्न कर दिया, राम के वनगमन से अन्य माताएँ और अयोध्या के सभी नगरवासी अत्यंत दुःखी हैं।

I पुलकि - - - - - - नैन ॥

सन्दर्भ → कविता का नाम - "भरत राम का प्रेम"
कवि " " - 'तुलसीदास'

प्रसंग → जब भरत राम से मिलने वन जाते हैं वे उन्हें अयोध्या वापस लाने के उद्देश्य से गए हैं, उस सभा में वशिष्ठ मुनि अपनी बात कह चुके हैं, अब वे भरत से बोलने के लिए कहते हैं -

व्याख्या → शरीर से पुलकित (प्रसन्न) होकर भरत सभा में खड़े हो गए और कमल के समान नेत्रों से प्रेमाश्रु (प्रेम के आँसुओं) की बाढ़ आ गई अर्थात् वे भावुक होकर रोने लगे, उन्होंने कहा मेरा कहना तो मुनिनाथ ने निभा दिया अर्थात् जो कुछ मुझे कहना था वह तो उन्होंने कह दिया अब इससे अधिक मैं क्या कहूँ? मैं

Scanned with CamScanner

अपने अपने स्वामी (राम) का स्वभाव जानता हूँ उन्होंने तो अपराधी पर भी कभी क्रोध नहीं किया और मुझ पर तो उनकी विशेष कृपा है। उन्हें खेल में भी कभी गुस्सा करते या अप्रसन्न होते नहीं देखा। बचपन में भी मैंने कभी उनका साथ नहीं छोड़ा और उन्होंने भी कभी मेरे मन को नहीं तोड़ा अर्थात कभी मेरे मन के विपरीत कार्य नहीं किया। मैंने प्रभु (राम) की कृपा की रीति को अनुभव किया है। वे मेरे खेल में हारने पर भी जीत दिया करते थे, अर्थात् उनकी मुझ पर विशेष कृपा थी।

मैंने भी प्रेम और संकोचवश कभी उनके सामने मुँह नहीं खोला। प्रेम के प्यासे मेरे नेत्र आज तक प्रभु (राम) के दर्शन से तृप्त नहीं हुए अर्थात् वे आज भी और हमेशा उनके साथ रहना चाहते हैं। उनका दर्शन पाना चाहते हैं।

काव्य शिल्प / विशेष →
छंद - चौपाई, दोहा
भाषा - अवधी
रस - करुण रस
कविता - तुकांत
अलंकार - अनुप्रास, रूपक

II विधि - - - - - - रघुराउ ॥
सन्दर्भ व प्रसंग - उपरोक्त।
व्याख्या → भरत कहते हैं कि विधाता से मेरा दुलार सहा नहीं गया और उसने नीच माता के बहाने मेरे और

Scanned with CamScanner

प्रभु राम के बीच अलगाव उत्पन्न (पैदा) कर दिया, यह भी कहना मुझे शोभा नहीं देता क्योंकि अपनी समझ से कौन साधु (सज्जन) होता है? अगर मैं स्वयं को सज्जन कहूं यह बात सही नहीं होगी। इसलिए वह कहते हैं कि मुझे अपनी माता को इस प्रकार नीच कहना शोभा नहीं देता, माँ नीच है और मैं साधु और सदाचारी हूं ऐसा विचार हृदय में लाना ही करोड़ो दुराचारों के समान है, वे कहते हैं कि क्या कोदो की बाली उत्तम धान पैदा कर सकती है? और क्या काला घोंघा उत्तम (श्रेष्ठ) मोती उत्पन्न कर सकता है? इन प्रश्नों के माध्यम से कहना चाहते हैं कि जो दुराचारी माता है तो उसका पुत्र भी दुराचारी ही होगा। यहाँ वे अपने को दोषी मानते हुए अपने मनोभाव प्रकट कर रहे हैं, वे कहते हैं मैं सपने में भी किसी को दोष नहीं देना चाहता क्योंकि जो कुछ हुआ है वह मेरा अभाग्य है, मेरा अभाग्य ही अथाह समुद्र है। आगे वे कहते हैं कि मैंने अपने पापों को जाने बिना ही माता को कटु वचन कहे, उनके हृदय को दुःख पहुँचाया मैंने ये पाप किया है। मेरा भाग्य ही दोषी है, अब मेरा उद्धार कौन कर सकता है? मैं अपने हृदय में सब ओर से खोजकर हार गया। अब एक ही प्रकार से मेरा उद्धार हो सकता है, वह यह है कि मेरे गुरु (वशिष्ठ) सर्वसमर्थ हैं, सीता राम मेरे स्वामी हैं इसी से मुझे अपना परिणाम अच्छा जान पड़ता है।

Scanned with CamScanner

इस सभा में गुरुजी व श्री राम के समक्ष इस पवित्र तीर्थ स्थान पर मैं सत्यभाव से यह सब कुछ कह रहा हूँ। मेरा यह सब कहना प्रेम है या प्रपंच (छल-कपट), झूठ है या सच यह सब कुछ जानने वाले मुनि वशिष्ठ व अन्तरयामी श्री राम भली-भाँति जानते हैं।

काव्य सौन्दर्य :-

छंद - चौपाई, दोहा
भाषा - अवधी
रस - करुण रस
अलंकार - अनुप्रास, दृष्टांत अलंकार
कविता - तुकांत

III भूपति - - - - - - - - - काहि ॥

संदर्भ - उपरोक्त,

प्रसंग → प्रस्तुत काव्यांश में भरत स्वयं को सभी अनर्थों की जड़ कह कर अपने आपको पूरे घटना क्रम का दोषी मानते हुए कहते हैं -

व्याख्या → भरत कहते हैं कि सम्पूर्ण संसार जानता है कि माता (कैकेयी) की दुर्बुद्धि के कारण प्रेम के प्रण का पालन करते हुए राजा (दशरथ) मृत्यु को प्राप्त हो गए। इससे माताओं की व्याकुलता बढ़ गई है और अयोध्या के नर-नारी इस असहनीय पीड़ा से जल रहे हैं, और यह सब मुझसे देखा नहीं जा रहा है, वे कहते हैं इन सब अनर्थों का मूल मैं ही हूँ। इसलिए सब कुछ सुन और समझकर मैंने यह दुःख सहा है। राम, सीता और लक्ष्मण के साथ मुनियों का वेश धारण करके बिना पादुका (चप्पल) पहने पैदल जाने की बात सुनकर

भी वे जीवित रह गए। वे शंकर को साक्षी मानकर कहते हैं उन्होंने इस घाव को सहा और वे जीवित रह गए। फिर निषादराज का राम के प्रति प्रेम देखकर उनका वज्र से कठोर हृदय छिदा नहीं। यहाँ आकर सब अपनी आँखों से देख लिया। मैं जीवित रहकर सब कुछ सहूँगा। जिन राम को देखकर मार्ग के भयंकर विषधारी साँपिन और बिच्छू अपना विष त्याग देते है, वे ही रघुनंदन (राम) लक्ष्मण और सीता जिसको शत्रु जान पड़े, उस केकैयी के पुत्र (भरत) को छोड़कर देव (भगवान) असहनीय दुःख और किसे सहन कराएगा।

काव्य सौन्दर्य :-

भाषा - अवधी
अलंकार - अनुप्रास
छंद - चौपाई, दोहा
रस - करुण रस
कविता - तुकांत

Scanned with CamScanner